Creative Expressions

Poem by our Ph.D Alumnus, Dr.Akinchan Buddhodev Sinha

Deputy Director
The Institute of Company Secretaries of India
Ministry of Corporate Affairs

कल किसने देखा .....

अद्भुत, अनोखी जीवन की रेखा,
जीवन की पगडंडियों पर कल किसने देखा,
जीवन सुख-दुःख का अविरल घेरा,
मानो सूर्योदय से सूर्यास्त का हो शाश्वत फेरा।

परिश्रम को मित्र बनाये या फिर स्वीकार करें भाग्य का लेखा,
अनिश्चितताओं के भवंडर में कल किसने देखा,
विषमताओं का तो लगा रहेगा आजीवन मेला,
सकारात्मक प्रयासों से ही संभव है जीवन की सुखद बेला।

उत्कर्ष की ओर बढ़े कदम, सर्वोच्च न हो भाग्य की रेखा,
हमारे प्रयास सदा अविरत रहे, आखिर कल किसने देखा।

-अकिंचन

Posters by our Talented Students of IUJ